हम भूल गये

तुमने तो कितना दिया प्रभु "बस इतना ही" कह रोते रहे ।
हम और-और की चाहत में , अनुकम्पा तेरी भूले ही रहे ।

अगनित उपहार दिये तुमने, हम सबको सुखी बनाने को।
आंखें दीं, सुन्दर दृश्य दिये और कान दिये स्वर सुनने को।

जब भूख लगी भोजन है दिया, पानी है प्यास बुझाने को।
दो हाथ मिले और पैर मिले, अपना नसीब आजमाने को। तुमने तो------

जन्म और जीवन है मिला, तो मन विचार भी तुमसे मिले ।
धन - धान्य और संतान मिली, अपना संसार बसाने को ।

अनमोल खजाना पाकर हम स्वच्छंद हुए सब भूल गये ।
लालच, घंमड, खुदगर्जी के फंदे मे फंसकर भ्रष्ट हुये ।

कारण, कर्ता, कर्तव्य तुम्हीं, हम अहंकार-वश भूल गये ।
निर्णय की शक्ति मिली तुमसे, दी बुद्धि याद दिलाने को। तुमने तो------

तू-तू, मैं-मैं और माया के जंगल में भटक रहे प्राणी ।
दुर्जेय दुर्गुणी शत्रु यहाँ, यह मेरे बस की जीत कहाँ ।

तू ही मालिक जग-सागर का जिसमें डुबें उतराएँ हम
सेवा की सुगठित नाव बने, दो भक्ति पार लगाने को।

तुम हो दयालु प्रभु दो हमको संवेदना दुखी-गरीबों की ।
हर दिल में दर्द मिले थोड़ा मानव को धन्य बनाने को । तुमने तो------

रश्मि उमेश रोहतगी नोवी मिशिगन अमरीका मार्च इक्किस दो हजार छः